राजस्थान

टेक्निकल हेल्पर

Jaipur Vidyut Vitran Nigam Limited (JVVNL)

भाग - 3

Prelims & Mains

सामान्य ज्ञान, विज्ञान एवं गणित

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2	वैदिक काल	4
3	बौद्ध और जैन धर्म	8
4	महाजनपद काल	11
5	मौर्य एवं मौर्योत्तर काल	13
6	दिल्ली सल्तनत काल	18
7	मुगल काल	22
8	1857 का विद्रोह	25
9	भारत के गवर्नर जनरल और वायसराय	26
10	राष्ट्रीय आन्दोलन	31
11	भारतीय आन्दोलन के चरण	33
12	भारत, आकार और स्थिति	42
13	भारत के भौगोलिक प्रदेश	44
14	भारत का अपवाह तंत्र	60
15	भारत की जलवायु	70
16	प्रमुख फसलें	80
17	ऊर्जा संसाधन	86
18	भारत में खनिज	96
19	भारत का औद्योगिक क्षेत्र	100
20	विश्व भूगोल के महत्वपूर्ण तथ्य	105
21	कृषि	111
22	पंचवर्षीय योजनाएँ	123
23	सतत विकास	125

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	भारत का बजट 2025–26	130
25	जीव विज्ञान	135
26	भौतिक शास्त्र	170
27	रसायन शास्त्र	185
28	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर सिस्टम	201
29	संख्या पद्धति	207
30	सरलीकरण	214
31	लघुत्तम समापवर्त्य व महत्तम समापवर्तक	218
32	करणी व घातांक	221
33	प्रतिशतता	225
34	लाभ – हानि	229
35	अनुपात व समानुपात	234
36	मिश्रण एवं एलीगेशन	238
37	औसत	240
38	समय और कार्य	244
39	चाल, समय और दूरी	247
40	नाव और धारा	251
41	साधारण ब्याज	253
42	चक्रवृद्धि ब्याज	256
43	क्षेत्रमिति	259

1 CHAPTER सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार:

- सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे कांस्य युगीन या हड़प्पा सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है, एक शहरी सभ्यता थी जो सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के आसपास विकसित हुई थी।
- यह सभ्यता लगभग 2600 ईसा पूर्व और 1700 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक **जॉन मार्शल** द्वारा इसे **"सिंधु घाटी सभ्यता"** नाम दिया गया था।
- प्रथम उत्खनित स्थल हड़प्पा था, जिसे **दया राम साहनी** ने वर्ष 1921 में खोजा था, इसी कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।

नोट: अलेक्जेंडर कनिंघम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के **प्रथम** अध्यक्ष थे, तथा उन्हें **पुरातत्व के जनक** के रूप में भी जाना जाता है।

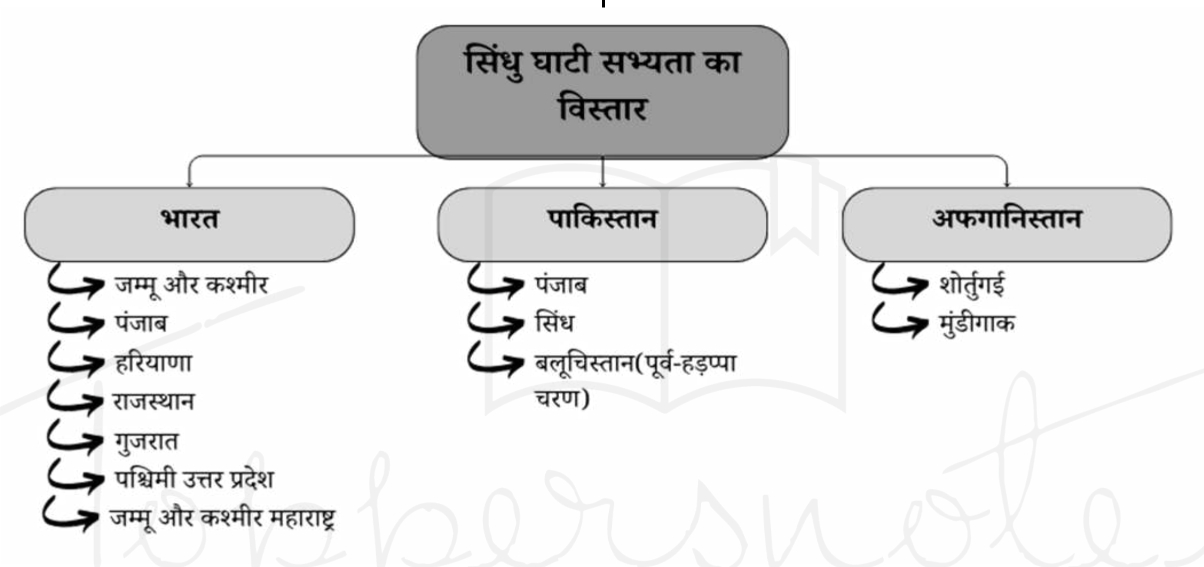

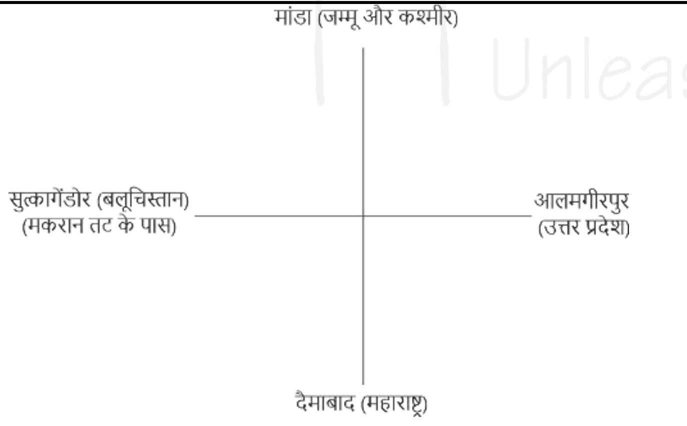

- सबसे उत्तरी स्थल - मांडा (जम्मू और कश्मीर)
- सबसे दक्षिणी स्थल - दैमाबाद (महाराष्ट्र),
- सबसे पूर्वी स्थल - आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) और
- सबसे पश्चिमी स्थल - सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) क्रमशः मांडा (जम्मू और कश्मीर), दैमाबाद (महाराष्ट्र), आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) और सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) हैं।

नोट:

- **अफगानिस्तान** में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे – **शोर्तगोई** एवं **मुंडीगाक**।
- शोर्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के लक्षण मिले हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता से **12 गुना बड़ी** थी जबकि **मिस्र** की सभ्यता से **20 गुना बड़ी** थी।
- **भारत विभाजन** के पूर्व खोजे गए स्थल **पाकिस्तान** में चले गए।
- भारत में केवल दो स्थल रहे –
  - **धोलावीरा (गुजरात)**
  - **रोपड़ (पंजाब)**
- भारत का सबसे बड़ा स्थल **राखीगढ़ी (हरियाणा)** है तथा दूसरा बड़ा स्थल **धोलावीरा (गुजरात)** है।
- **पिग्गट** ने **हड़प्पा** एवं **मोहनजोदड़ो** को सिंधु सभ्यता की **जुड़वाँ राजधानी** बताया है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- बड़े नगर (पाकिस्तान में):
  - **गनेरीवाला**
  - **हड़प्पा**
  - **मोहनजोदड़ो**

सिन्धु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताए

सिंधु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताएँ (संक्षिप्त रूप में):

नगर नियोजन:

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग। पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था।
- पश्चिमी भाग में प्राशासनिक लोग रहते हैं। तथा पूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान हैं।
- सिंधु घाटी के समकालीन सभ्यताओं में इस विशेषता का अभाव था ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे।
- घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की तरफ़ न खुलकर पीछे की ओर खुलते हैं। केवल लोथल में मुख्य सड़क की तरफ़ घरों के दरवाजे खुलते हैं।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है जबकि चन्हुदड़ो में कोई परकोटे नहीं है |
- धोलावीरा तीन भागों में विभक्त हैं – पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यम।
- लोथल एवं सुरकोटड़ा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनों ही परकोटे युक्त दीवारों से घिरे हुए हैं।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात् शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरो को बसाया था तथा सभी मार्ग एक-दूसरे को समकोण पर काटते हैं।
- सबसे चौड़ी सड़के 10 मीटर (मोहनजोदड़ो) की मिलती है। अनुमानतः राजमार्ग रहा होगा।
- घरों में उत्कृष्ठ नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बड़ी नालियों को ढक कर रखते थे |
- भवन के अन्दर सामान्यत: 3 या 4 कक्ष, स्नानगृह, रसोईघर एवं आंगन के रूप में होता था।
- कच्ची एवं पक्की ईंटें का प्रयोग करते थे
- **ईंट का आकार – 1 : 2 : 4**
- जल निकासी हेतु पक्की ईटों की नालियों होती थी। विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिले है।

<u>सिन्धु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल</u>

साइट/स्थल/वर्ष	स्थान/नदी/खोजकर्ता	विशेषताएँ
1. हड़प्पा (1921)	• स्थान: पंजाब,पाकिस्तान • नदी: रावी • खोजकर्ता: दयाराम साहिनी	प्रत्येक पंक्ति में 6 अन्नागार , लिंगम, योनि और मातृ देवी की (टेराकोटा मूर्तियाँ), R - 37 नामक कब्रिस्तान मिला ,एक शव को ताबूत में दफनाया गया है इसे **विदेशी की कब्र** कहते है |, 6 -6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला , एक स्त्री के गर्भ से निकलते हुए पौधे की मृणमूर्ति मिली है जिसे संभवत: **उर्वरता की देवी** कहते होंगे	
2. चन्हुदड़ो	• स्थान: सिंध, पाकिस्तान • नदी: सिंधु • खोजकर्ता:गोपाल मजूमदार	एकमात्र नगर जहां गढ़ किला नहीं है, यहाँ से मनका(मोती) बनाने का के कारखाने के साक्ष्य मिले हैं , मुहर बनाने का कार्य , कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा कने के पद चिन्ह मिला , लिपस्टिक इत्यादि के साक्ष्य प्राप्त होते हैं ।
3. मोहनजोदड़ो	• स्थान: सिंध, पाकिस्तान • नदी: सिंधु • खोजकर्ता:राखलदास बनर्जी	**'मृतकों का टीला'** के नाम से जाना जाता है, गढ़किला, महान विशाल स्नानागार (आकार 11.88 x 7.01 x 2.43 मीटर) और **विशाल महान अन्नागार** (आकार ल.x चौ. 45.71x 15.23 मीटर , सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी ईमारत)। मातृ देवी की मिट्टी की मूर्ति, कांस्य की नर्तकी की मूर्ति मिली है, पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है , मेसोपोटामिया की मुहर मिली , बाढ़ के पतन के साक्ष्य मिले	
4. लोथल	• स्थान: गुजरात • नदी: भोगवा • खोजकर्ता: एस.आर. राव	प्राचीन बंदरगाह, गोदीवाड़ा (जहाज़ बनाने का स्थान) गोदी, टेराकोटा जहाज, अग्नि वेदी, संयुक्त अंत्येष्टि, मनका कारखाना, चावल के साक्ष्य , चक्की के दो पाट, छोटे दिशा सूचक यंत्र , घोड़े की मृणमूर्ति	
5. कालीबंगा	• स्थान: राजस्थान • नदी: घग्गर • खोजकर्ता: अमलानंद घोष	7 अग्नि वेदिकाएँ व हवन कुंड के साक्ष्य मिले, युग्मित शवाधन, शल्यचिकित्सा की जानकारी, काली चूड़ियाँ, हल से जूते हुए खेत के साक्ष्य, लाल रंग के मिट्टी के बर्तन , ऊँट की हड्डियाँ, भूकंप के साक्ष्य

		• नोट: यहाँ उत्खनन के पांच स्तर मिले जिसमे प्रथम दो स्तर प्राक हड़प्पा कालीन था अन्य स्तर हड़प्पा के समकालीन थे। • इतिहासकार दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को हड़प्पा की तीसरी राजधानी कहा |
6. सुरकोताडा	• स्थान: गुजरात • खोजकर्ता: जगपति जोशी	घोड़े की हड्डियों के पहले प्रथम वास्तविक अवशेष
7. सुत्कागेंडोर	• स्थान: पाकिस्तान	तटीय शहर, सबसे पश्चिमी सबसे दूर स्थल
8. धोलावीरा	• स्थान: गुजरात • खोजकर्ता: जगपति जोशी • खुदाई शुरू : आर.एस.बिष्ट	सबसे नवीन नगर जिसका उत्खनन किया गया | कच्छ क्षेत्र में स्थित, विशाल जलाशय मिले है। 2021 में इसे विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल गया (भारत में 40वाँ)
9. राखीगढ़ी	• स्थान: हरियाणा • नदी: घग्गर • खोजकर्ता: अमरेंद्र नाथ	भारत का सबसे बड़ा स्थल, टेराकोटा के से निर्मित पहिये और खिलौने
10. भिराणा	• हरियाणा	सबसे पुराना सिन्धु घाटी सभ्यता स्थल
11. बनावली	• स्थान: हरियाणा • नदी: घग्गर • खोजकर्ता: आर.एस.बिष्ट	ग्रिड पैटर्न का अभाव, सूखी सरस्वती नदी
12. रोपड़	• स्थान: पंजाब, भारत • नदी: सतलुज	मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य, अंडाकार अंत्येष्टि गड्ढे, यह स्वतंत्र भारत का पहला हड़प्पा स्थल है
13. आलमगीरपुर	• स्थान: मेरठ, उत्तर प्रदेश • नदी: यमुना	सबसे पूर्वी स्थल
14. मेहरगढ़	• स्थान: पाकिस्तान	मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार
15. कोट दिजी	• स्थान: पाकिस्तान	बैल और मातृ देवी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई ।
16. बालू	• स्थान: हरियाणा	**विभिन्न पौधों के सर्वप्रथम सबसे पहले पार्थिव अवशेष**, सबसे पहले लहसुन का के साक्ष्य)।
17. दैमाबाद	• स्थान: महाराष्ट्र	सबसे दक्षिणी स्थल, कांस्य रथ
18. केरल-नो-धोरो	• स्थान: गुजरात	नमक उत्पादन केंद्र
19. मांडा	• स्थान: जम्मू और कश्मीर	सबसे उत्तरी स्थल

2 CHAPTER

वैदिक काल

वैदिक काल :

पूर्व वैदिक काल - 1500 - 1000 ई.पू.

उत्तर वैदिक काल - 1000- 600 ई.पू.

पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- भारत में आर्यों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत वैदिक साहित्य है, जो संस्कृत में लिखा गया है।
- ऋग्वेद में आर्यों और उनके प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र सप्त-सैंधव का उल्लेख मिलता है।
- सप्त-सिंधव क्षेत्र सात नदियों का क्षेत्र था, जिनके नाम निम्नलिखित हैं:
  1. सिंधु (Indus)
  2. वितस्ता (झेलम - Jhelum)
  3. अस्किनी (चिनाब - Chenab)
  4. परुष्णी (रवि - Ravi)
  5. विपाशा (ब्यास - Beas)
  6. शतुद्रि (सतलज - Sutlej)
  7. सरस्वती (नदितमा / हर्कवती - Saraswati)
- ऋग्वेद के नंदी सूक्त में पूर्व में गंगा नदी और पश्चिम में कुंभा (काबुल नदी) का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेदिक ऋचाएं उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रतिबिंबित करती हैं।
- इसमें आर्यों और दास या दस्यु (गैर-आर्य) के बीच संघर्ष का वर्णन है।
- साथ ही, यह भरत कुल के दिवोदास द्वारा एक प्रमुख दस्यु सरदार शंबर की पराजय का उल्लेख करता है।

ऋग्वेद

- यह चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद) में से एक है।
- यह इंडो-यूरोपीय भाषा का सबसे प्राचीन उदाहरण है।
- इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण और अन्य देवताओं को अर्पित प्रार्थनाओं का संग्रह है।
- इसमें 1028 मंत्र हैं, जो 10 मंडलों (पुस्तकों) में विभाजित हैं:
  - द्वितीय से सप्तम मंडल सबसे पहले रचित हुए थे।
  - प्रथम और दशम मंडल सबसे अंत में रचित हुए।

प्रारंभिक वैदिक काल का भौगोलिक विस्तार

- आर्य भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहते थे।

जेंड अवेस्ता

- पारसी धर्म का प्रमुख ग्रंथ, जो भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों का संदर्भ देता है।
- यह ग्रंथ इंडो-ईरानी भाषाएं बोलने वाले लोगों की भूमि और उनके देवताओं का उल्लेख करता है।
- इसमें वैदिक ग्रंथों से भाषाई समानता वाले शब्द मिलते हैं, जो आर्यों के प्रारंभिक निवास स्थान भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर होने का अप्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

पूर्व वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

- समाज का संगठन: कुल (परिवार), विस (कुल), ग्राम (समुदाय) पर आधारित था।
- **चातुर्वर्ण्य व्यवस्था**: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कर्म के आधार पर वर्णों के बीच गतिशीलता थी।
- महिलाएं आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास में पुरुषों के समान अधिकारों से संपन्न थीं।
- **प्रमुख महिला विद्वान**: अपाला, विश्ववारा, घोषा, लोपामुद्रा।
- प्रेम विवाह (गंधर्व विवाह भी कहते है), विधवा पुनर्विवाह (नियोग प्रथा)।
- समाज पितृसत्तात्मक था, दास प्रथा मौजूद थी (दास: पराजित आर्य, दस्यु: अनार्य)।

पूर्व वैदिक काल की अर्थव्यवस्था

- मुख्य व्यवसाय: पशुपालन (गायें)।
  - **गोपा**: गाय,
  - **गोपजन्य**: गाय का स्वामी,
  - **दूत्री**: गाय दुहने वाला।
  - **गविष्ठी**: गायों की खोज।
  - **गोधूली** - संध्या
  - **गोधूम** - गेंहू
- तांबे और कांसे के उपकरण भी अर्थव्यवस्था का हिस्सा थे तथा **"निष्क"** सोने के सिक्के प्रचलित थे।
- कर प्रणाली प्रचलित नहीं थी, लेकिन 'बलि' कर स्वेच्छा से कबीले के मुखिया को अर्पित किया जाता था।

पूर्व वैदिक काल की राजनीतिक व्यवस्था

- राजनीति कबीलों (जन) पर आधारित थी और इनके कबीलों को जन कहा जाता था तथा आर्य कबीलों का मुखिया "राजन" होता था।
- **सभा**, **समिति** और **विदथ** जैसे जनप्रतिनिधि संस्थाएं राजन की सहायता करती थीं।

1. सभा	कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों (जन के वरिष्ठ सदस्य) का समुदाय, जिसमें महिलाएं भी शामिल थीं।
2. समिति	यह राजन का चुनाव करने वाले सामान्य लोगों का समूह था। इसमें केवल पुरुष ही हिस्सा लेते थे।
3. विदथ	इसका निर्माण धार्मिक उद्देश्य और धर्म से संबंधित निर्णय लेने के लिए किया जाता था । इसमें पुरुष और महिला दोनों भाग लेते थे।

अधिकारियों का पदानुक्रम

- **पुरोहित**: राजा के मुख्य सलाहकार
- **सेनानी**: सेना प्रमुख
- **ग्रामणी**: गाँव का मुखिया

पूर्व वैदिक काल का धर्म

- प्रकृति उपासक: पृथ्वी, इंद्र, अग्नि, वायु, अदिति, वरुण, सावित्री (गायत्री मंत्र समर्पित) की पूजा होती थी।

मृद्भांड

- गेरू रंग के मिट्टी के बर्तन।

वेद

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों को नित्य, प्रामाणिक और अपौरुषेय माना जाता है।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को **दृष्टा** कहा जाता है।

वेद 4 प्रकार के होते हैं:

1. **ऋग्वेद**
   - ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त और 10580 (10600) मंत्र होते हैं।
   - पहला और दसवाँ मण्डल बाद में जोड़े गए हैं। दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल / परिवार मण्डल कहा जाता है।
   - तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है। गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की। यह मंत्र सवितृ (सूर्य) को समर्पित है।
   - सर्वाधिक मूर्तियाँ मातृ देवी की मिली हैं।
   - लिंग और योनि की पूजा की जाती थी।
   - योग से परिचित थे।
   - वे प्राकृतिक बहुदेववाद में विश्वास करते थे और मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास रखते थे।
   - सिंधु वासी घोड़े, गाय, शेर और ऊँट से परिचित नहीं थे और लोहे से भी परिचित नहीं थे।
   - **उपनिषद**
     - ऐतरेय
     - कौषीतकी
2. **यजुर्वेद**
   - यजुर्वेद दो भागों में बाँटा गया है:
     - शुक्ल यजुर्वेद
     - कृष्ण यजुर्वेद
   - यह गद्य और पद्य दोनों रूपों में है।
   - इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है।
   - मंत्र पढ़ने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है।
   - यज्ञ अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है।
   - उपवेद है - धनुर्वेद।
   - **उपनिषद**
     - बृहदारण्यक उपनिषद
     - कठोपनिषद
3. **सामवेद**
   - यह संगीत का प्राचीनतम शास्त्र है।
   - इसमें वैदिक मंत्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं।
   - यह भगवान कृष्ण का प्रिय वेद है।
   - मंत्रों का उच्चारण करने वाले को उद्गाता कहा जाता है।
   - उपवेद है - गंधर्ववेद।
   - **उपनिषद**
     - छांदोग्य उपनिषद
     - केन उपनिषद
4. **अथर्ववेद**
   - अथर्ववेद का रचनाकार अथर्व ऋषि और आंगीरस ऋषि हैं।
   - इसे अथर्वांगीरस वेद भी कहा जाता है।
   - इसमें काले जादू-टोने, टोटके और चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।
   - औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र-मंत्र आदि का विवरण है।
   - मंत्रों का उच्चारण करने वाले को "ब्रह्म" कहा जाता है।
   - उपवेद है - शिल्पवेद।
   - **उपनिषद**
     - **माण्डूक्य उपनिषद:** इसमें "सत्यमेव जयते" का उल्लेख किया गया है।
     - **महा उपनिषद:** इसमें "वसुधैव कुटुंबकम्" का उल्लेख किया गया है।

ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक जानकारी

- हिमवंत पर्वत (हिमालय)
- मुंजवत पर्वत (हिंदूकुश)
- सप्त सैन्धव प्रदेश (सात नदियाँ) - यह वैदिक आर्यों का निवास स्थान था।

वेदों के उपविभाजन

1. **संहिता**
   - ये वेदों के मुख्य अंग होते हैं जिसमें वैदिक मंत्रों और प्रार्थनाओं का संग्रह होता है, जो विभिन्न अनुष्ठानों से सम्बंधित होते हैं।
2. **ब्राह्मण**
   - ये श्रुति साहित्य का हिस्सा (प्रकट ज्ञान) हैं।
   - रचना काल: 900-700 ई.पू.
   - प्रत्येक वेद के साथ एक ब्राह्मण ग्रंथ संलग्न होता है, जो वेदों पर टीकाओं का संग्रह होता है।
     - **ऋग्वेद:** ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकी ब्राह्मण
     - **सामवेद**: तांड्य महाब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण
     - **यजुर्वेद:** तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण
     - **अथर्ववेद**: गोपथ ब्राह्मण
   - इसमें कथाओं, तथ्यों, नैतिक आख्यानों और वैदिक अनुष्ठानों की विस्तृत व्याख्याएँ दी जाती हैं।
   - इसमें अनुष्ठान करने के निर्देश और इन अनुष्ठानों में प्रयुक्त पवित्र शब्दों के प्रतीकात्मक महत्व की व्याख्या भी होती है।
3. **आरण्यक**
   - आरण्यक ग्रंथ को प्रत्येक वेद के साथ शामिल किया गया है, जो वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के पीछे के दर्शन का वर्णन करते हैं।
   - यह जीवन के चक्र (जन्म और मृत्यु) और आत्मा पर केंद्रित होते हैं।
   - इन्हें वनवासी मुनियों (पवित्र और विद्वान व्यक्ति) द्वारा सिखाया जाता था।
4. **उपनिषद**
   - वैदिक साहित्य के विकास के अन्तिम चरण में उपनिषद-ग्रंथ आते हैं, इसलिए इन्हें "वेदांत" भी कहा जाता है।
   - उपनिषदों में गुरु-शिष्य के संवादों के रूप में गूढ़ बातें कही गई हैं।
   - इनकी विवेचनाओं में आत्मा, ब्रह्म और संसार के रहस्यों का उल्लेख किया गया है।
   - ये मानव जीवन, मोक्ष (मुक्ति) का मार्ग, ब्रह्मांड और मानव जाति की उत्पत्ति, जीवन-मृत्यु चक्र और मानव के भौतिक व आध्यात्मिक खोजों पर विश्लेषण करते हैं।
   - कुल 200 ज्ञात उपनिषद हैं, जिनमें से 108 को "मुक्तिका कानन" कहा गया है।

नोट:

सत्यकाम जाबाला

- एक वैदिक ऋषि, गौतम ऋषि के अनुयायी, जो छांदोग्य उपनिषद के अध्याय IV में वर्णित हैं।
- उन्होंने अविवाहित माँ होने के कलंक को चुनौती दी।

वेदांग

- वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया। यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नहीं है।
- इसके छह भाग हैं।
  1. **शिक्षा -** इसे वेदों की नासिका कहा जाता है।
  2. **ज्योतिष -** इसे वेदों की आंख कहा जाता है।
  3. **व्याकरण -** इसे वेदों का मुख कहा जाता है।
  4. **छन्द -** इसे वेदों का पैर कहा जाता है।
  5. **निरुक्त -** इसे वेदों का कान कहा जाता है।
  6. **कल्प -** इसे वेदों का हाथ कहा जाता है।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति का सबसे प्राचीन ग्रंथ है।

पुराण- संख्या – 18

- ऋषि लोमहर्षि एवं उनके पुत्र उग्रश्रवा ने इसे संकलित किया।
- मत्स्य पुराण: यह सबसे प्राचीन और प्रामाणिक पुराण है। इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख है।
- **विष्णु पुराण**: मौर्य वंश का उल्लेख है।
- **वायु पुराण:** गुप्त वंश का उल्लेख है।\
- **मार्कण्डेय पुराण**: इसमें दुर्गासप्तशती और महामृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है।
- देवी महात्म्य: शुंगवंश का उल्लेख है।

स्मृति साहित्य

- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है। इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

- 1000 ई. पू. में लोहे के प्रयोग से उत्तर वैदिक काल की शुरुआत मानी जाती है।
- इस काल में अन्य 3 वेदों (साम, अथर्व और यजुर्वेद) की रचना की गई।
- उत्तर वैदिक कालीन ग्रंथों में गंगा, यमुना, गंडक और सदानीरा नदियों का उल्लेख है।
- कुरु जनजाति उत्तर वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण जनजाति थी। इसमें दो कुल शामिल थे - पांडव और कौरव।
  - परीक्षित और जन्मेजय इसके प्रसिद्ध शासक थे

उत्तर वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था

- इस काल में भूमि प्रमुख आर्थिक संपत्ति बन गई, किन्तु करों की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी।
- मुख्य व्यवसाय - कृषि:
  - जौ, चावल और गेहूं की फसलों की खेती होती थी।
- निष्क के अलावा, शतमान और कृष्णल जैसे सोने और चांदी के सिक्के प्रयोग में लाए जाते थे।
- इस काल में बेबीलोन जैसे देशों के साथ व्यापार होता था।
- इस काल में धातुकर्म, चमड़े का कार्य, बढ़ईगीरी और मिट्टी के बर्तन निर्माण में काफी प्रगति हुई।
- लकड़ी का हल (रुरा) का उपयोग किया जाता था।

Unleash the topper in you

उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

- इस काल में **राजन** सबसे महत्वपूर्ण पद था।
- राजन की सहायता और सलाह के लिए पुरोहित वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
  - राजन की सर्वोच्चता को निर्धारित करने के लिए इसे विभिन्न अनुष्ठानिक यज्ञों से जोड़ा गया, जैसे:
    - राजसूय यज्ञ (राज्याभिषेक समारोह, जिसमें पुरोहित वर्ग के आशीर्वाद से राजन को सिंहासन प्राप्त होता है)
    - अश्वमेध यज्ञ (राज्य विस्तार से संबंधित)
    - वाजपेय यज्ञ (रथ दौड़)
- राजन की उपाधियाँ: राजविश्वजन, अहिलभुवनपति, एकराट और सम्राट।
- महत्वपूर्ण अधिकारी:
  - **पुरोहित:** मुख्य सलाहकार
  - **सेनानी:** सेना प्रमुख
  - **ग्रामणी:** गाँव का मुखिया
- जनप्रतिनिधि संस्थाओं में परिवर्तन:
  - **सभा:** महिलाओं को इसमें प्रवेश की अनुमति नहीं थी।
  - **समिति:** इसका महत्व कम हो गया।
  - **विदथ:** इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

उत्तर वैदिक कालीन समाज

- इस काल में वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई और गोत्र प्रणाली मजबूत हो गई। अतः विभिन्न वर्णों के मध्य गतिशीलता कम हो गई।
- इस काल में चार आश्रमों की संकल्पना दी गई:
  - ब्रह्मचर्य (अध्यान काल)
  - गृहस्थ (विवाहित जीवन)
  - वानप्रस्थ (घर से आंशिक संन्यास, ज्ञान प्राप्ति के लिए)
  - संन्यास (पूर्ण संन्यास, आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए)
- धर्म:
  - **प्रजापति (सृष्टिकर्ता)** सबसे महत्वपूर्ण देवता थे।
  - अन्य महत्वपूर्ण देवता - विष्णु (संरक्षक) और रुद्र (विनाशक)।
- **मृद्भांड:** धूसर रंग के मिट्टी के बर्तन।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER बौद्ध और जैन धर्म

बौद्ध धर्म

- संस्थापक: गौतम बुद्ध (शाक्य वंश)।
- जन्म: कपिलवस्तु (नेपाल की तलहटी में स्थित) में लुंबिनी के निकट 563 ईसा पूर्व में हुआ था।
- बचपन का नाम: सिद्धार्थ।
- पिता: शुद्धोधन; माता: महामाया देवी।
- सौतेली माता/मौसी: महाप्रजापति गौतमी(लालन-पालन किया)
- पत्नी: यशोधरा; पुत्र: राहुल.
- वे 4 दृश्य जिन्होंने बुद्ध को आर्य सत्य की खोज में सांसारिक सुखों को त्यागने के लिए प्रेरित किया:
  - एक बूढ़ा आदमी
  - एक बीमार आदमी
  - एक शव
  - एक धार्मिक भिक्षुक
- 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने गृह त्याग कर दिया इस घटना को **महाभिनिष्क्रमण** के रूप में जाना जाता है।
- सिद्धार्थ विभिन्न स्थानों पर भटकते रहे और थोड़े समय के लिए अलार कलाम के शिष्य बने। उन्होंने साधु उद्दक रामपुत्र से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश **वाराणसी** के निकट **सारनाथ के मृगदाय** में दिया था। इस उपदेश को **धर्मचक्र-प्रवर्तन** (धर्मचक्र को घुमाने) कहा जाता है। इस उपदेश में उन्होंने **"चार आर्य सत्य"** और **"अष्टांगिक मार्ग"** का वर्णन किया, जो बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धांत हैं।
- सर्वाधिक उपदेश - श्रावस्ती में |
- **महापरिनिर्वाण**: 80 वर्ष की आयु में, 483 ई. पू. में कुशीनगर में हुआ।
- **प्रतीक**:
  - **जन्म**: कमल/बैल
  - **गृह त्याग**: घोड़ा
  - **आत्मज्ञान**: बोधि वृक्ष
  - **पहला उपदेश**: पहिया
  - **मृत्यु**: स्तूप
  - **भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक** - हाथी

बौद्ध दर्शन

- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**:
  1. **दुःख**: जन्म, बुढ़ापा, मृत्यु, और अधूरी इच्छाएँ दुख के कारण हैं।
  2. **दुःख समुदाय**: सुख, शक्ति, और लंबी आयु की प्यास दुख का कारण है।
  3. **दुःख निरोध**: दुख का अंत या मुक्ति **निर्वाण** है।
  4. **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा**: **मध्य मार्ग** या **आर्य अष्टांगिक मार्ग** है।

बुद्ध का मध्य मार्ग या अष्टांगिक मार्ग

- बौद्ध धर्म कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास करता है। व्यक्ति के इस जन्म की स्थिति उसके पिछले कर्मों पर निर्भर करती है। कर्मों के बंधन या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति ही निर्वाण है। इसे प्राप्त करने के लिए मध्य मार्ग का पालन करना आवश्यक है।

अष्टांगिक मार्ग

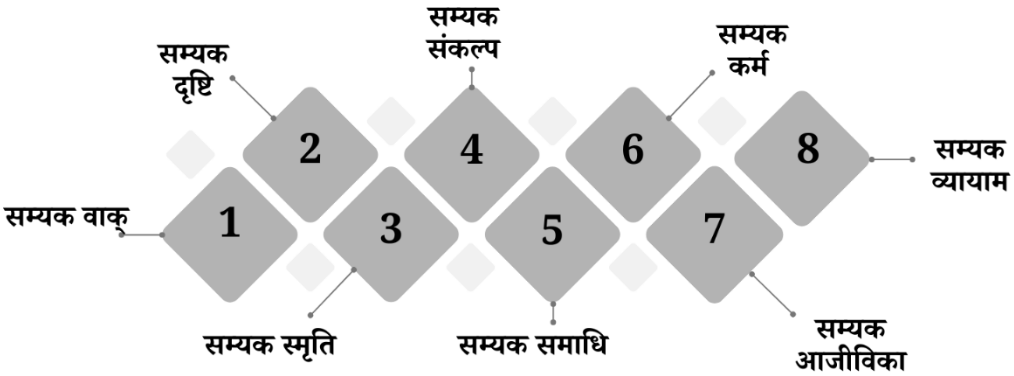

- बुद्ध ने सभी के प्रति अहिंसा और प्रेम का उपदेश दिया।

बौद्ध धर्म के तीन रत्न (त्रिरत्न) –

- बुद्ध: ज्ञान प्राप्त व्यक्ति।
- धम्म: बुद्ध की शिक्षाएँ (सिद्धांत)।
- संघ: भिक्षु समुदाय (मठवासी व्यवस्था)।

बौद्ध धर्म के संप्रदाय -

बौद्ध धर्म के संप्रदाय

हीनयान

- यह एक रूढ़िवादी बौद्ध संप्रदाय था।
- इनका मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं था।
- बोलचाल की मुख्य भाषा पाली थी।
- सम्राट अशोक ने हीनयान संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

महायान

- मूर्ति पूजा में विश्वास (बुद्ध की मूर्ति)।
- इसे “बोधिसत्वयान” या “बोधिसत्व” भी कहा जाता है।
- संस्कृत भाषा का व्यापक प्रयोग किया गया।
- कनिष्क के काल में महायान बौद्ध शाखा का उद्भव हुआ ।

थेरवाद

- ये पाली को पवित्र भाषा मानते थे।
- इसे हीनयान संप्रदाय का उत्तराधिकारी सम्प्रदाय माना जाता है।

वज्रयान

- यह सम्प्रदाय तंत्र, मंत्र और यंत्रों में विश्वास करता है।
- यह हिंदू धर्म से प्रभावित था।
- यह महायान बौद्ध दर्शन पर आधारित है।

बौद्ध संगीति

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 ई. पू.	राजगृह	आजातशत्रु	महा कश्यप
2. 383 ई. पू	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 250 ई. पू.	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गालिपुत
4. 72 ई.	कश्मीर	कनिष्क	वसुमित्र

1. **प्रथम संगीति** – दो पुस्तकें (ग्रंथ) लिखी गईं:

I. **सूत्र पिटक:** भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है।
- इसमें खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कहानियाँ (जातक) मिलती हैं।
- इसकी रचना आनंद ने की थी।

II. **विनय पिटक:** संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओं के आचार विचार (आचार्य) का वर्णन **मिलता** है। इसकी रचना उपाली ने की थी।

2. **द्वितीय संगीति –** बौद्ध धर्म 2 भागों में विभक्त हो गया:
   - **स्थविर तथा महासांघिक – दो शाखाओं में विभाजन।**
3. **तृतीय संगीति –** इसमें तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक का वर्णन किया गया। इसमें **"बौद्ध धर्म के दर्शन"** का वर्णन हो गया जिसे मोग्गलिपुत्त तिस्स ने संकलित किया। इस तीसरे पिटक को ही त्रिपिटक कहा गया। अभिधम्म पिटक की रचना मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की थी।
4. **चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म पुनः** दो भागों में विभक्त हो गया: हीनयान (छोटा मार्ग) और महायान (बड़ा मार्ग) | हीनयान एवं महायान की कई शाखाओं में विभक्त हो गया।

बौद्ध साहित्य

- बौद्ध साहित्य "त्रिपिटक" में उल्लेखित है।

1. **विनय पिटक:** बौद्ध भिक्षुओं के पालन किए जाने वाले नियमों और विनियमों का संग्रह।
2. **सुत्त पिटक:** बुद्ध के संवाद और शिक्षाएँ, जो नैतिकता और पवित्रधर्म से संबंधित हैं। इसमें 5 भाग हैं:
   - खुद्दक निकाय
   - अंगुत्तर निकाय
   - दीघ निकाय
   - मज्झिम निकाय
   - संयुक्त निकाय
3. **अभिधम्म पिटक:** दर्शन, नैतिकता, ज्ञान के सिद्धांत और मनोविज्ञान पर चर्चा।
   - पाली: मिलिंद पान्हो द्वारा मिलिंद पन्हो (मिलिंडा और नागसेना के बीच संवाद)।
   - संस्कृत: अश्वघोष द्वारा बुद्धचरित्र।
   - जातक कथाएँ: बुद्ध के पिछले जन्मों के बारे में जानकारी, मानव और पशु दोनों रूपों में।

जैन धर्म

- **जैन दर्शन** को सबसे पहले **तीर्थंकर ऋषभ देव** (पहले तीर्थंकर, जिन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है) द्वारा प्रतिपादित किया गया था।
- **24वें और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर** ने जैन धर्म को मुख्य रूप से प्रोत्साहित किया।
- वर्धमान महावीर के अनुयायियों को **'जैन'** कहा जाता है।
  - "जैन" शब्द "जिन" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'विजेता' (आत्मा का विजेता)।
  - **भद्रबाहु** द्वारा रचित **'कल्पसूत्र'** में 24 तीर्थंकरों का उल्लेख है।

प्रमुख तीर्थंकर –

1ST - ऋषभ देव

2ND - अजीतनाथ

22 वें - नेमिनाथ / अरिष्टनेमि

23 वें - पार्श्वनाथ

24 वें - वर्धमान महावीर

नोट: यजुर्वेद में तीन तीर्थंकरों ऋषभ देव, अजीतनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख है।

वर्धमान महावीर

- जैन धर्म को धर्म के रूप में स्थापित करने का श्रेय वर्धमान महावीर को जाता है।
- **जन्म**: 540 ई. पू. (लगभग), कुंडग्राम (वैशाली, बिहार), एक गण-संघ के शासक परिवार में।
  - **बच्चपन का नाम :** वर्धमान
  - **पिता**: सिद्धार्थ (ज्ञातृक क्षत्रिय)
  - **माता**: त्रिशला (लिच्छवी राजकुमारी, प्रमुख चेतक की बहन)
  - **पत्नी**: यशोदा
  - **पुत्री**: अनोज्जा प्रियदर्शना, जिनका विवाह 'जामालि' (महावीर के पहले शिष्य) से हुआ।
- **गृहत्याग**: 30 वर्ष की आयु में घर छोड़कर 12 साल तक सच्चे ज्ञान की तलाश में भटकते रहे। तपस्या का अभ्यास किया और कपड़े त्याग दिए।
- **ज्ञान प्राप्ति**: 42 वर्ष की आयु में **जृम्भिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान **(कैवल्य)** प्राप्त किया, जिससे उन्हें **'केवलिन'** कहा जाता है। इस ज्ञान के साथ उन्होंने दुख और सुख पर विजय प्राप्त की।
- **मृत्यु**: 468 ई. पू., पावापुरी (72 वर्ष) (बिहारशरीफ, बिहार)।
- **उपदेश**: पावा (पटना के पास) में अपना उपदेश दिया और अपना जीवन अंग, मिथिला, मगध और कोसल में अपने दर्शन का प्रचार करने में बिताया।

जैन दर्शन

- जैन धर्म का मानना है कि मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति है, जिसका अर्थ है जन्म और मृत्यु से मुक्ति। यह त्रिरत्न और पंचव्रत के अनुसरण से प्राप्त किया जा सकता है।
- मोक्ष/मुक्ति तीन सिद्धांतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जिसे 'त्रिरत्न' कहा जाता है:
  1. सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)
  2. सम्यक दर्शन (सही विश्वास/आस्था)
  3. सम्यक चरित (सही आचरण)
- सम्यक आचरण का अर्थ है पाँच महान व्रतों (पंचमहाव्रत) का पालन करना |
  1. अहिंसा (हिंसा नहीं करना)
  2. सत्य (सच बोलना)
  3. अस्तेय (चोरी नहीं करना)
  4. ब्रह्मचर्य (संयमित जीवन जीना)
  5. अपरिग्रह (भौतिक वस्तुओं से अलग रहना)
- **पंचव्रत :** महाव्रत (भिक्षुओं के लिए) और अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)
- जैन धर्म ने देवताओं के अस्तित्व को मान्यता दी लेकिन उन्हें जिन से निम्न स्थान दिया।
- **अनेकांतवाद/स्यादवाद:** जैन धर्म में अनेकांतवाद की एक मौलिक धारणा है, जो परम सत्य पर जोर देती है। इसके अनुसार, कोई भी इकाई एक बार में स्थायी होती है, लेकिन परिवर्तन से भी गुजरती है जो निरंतर और अपरिहार्य है।

जैन धर्म संगीति

जैन परिषद	स्थान	अध्यक्षता	विवरण
प्रथम जैन संगीति	पाटलिपुत्र (298 ई.पू.)	स्थूलभद्र (बिंदुसार द्वारा संरक्षित)	जैन धर्म की पवित्र शिक्षाओं को 12 अंगों में संकलित किया गया। (महावीर की पवित्र शिक्षाओं का वर्णन)
द्वितीय जैन संगीति	वल्लभी, गुजरात (512 ई.)	देवर्धि क्षमाश्रवण	12 उपांग (लघु खंड) जोड़े गए।

जैन धर्म की शाखाएँ

आधार	श्वेताम्बर	दिगम्बर
संस्थापक	स्थूलभद्र	भद्रबाहु
वेश-भूषा	सफेद वस्त्र	निर्वस्त्र
क्षेत्र	उत्तर भारत	दक्षिण भारत

4
CHAPTER

महाजनपद काल

महाजनपद (600 ई.पू.- 400 ई.पू.)

- महाजनपद काल को भारतीय इतिहास की दूसरी नगरीय क्रांति भी कहते है | (प्रथम नगरीय क्रांति सैंधव सभ्यता)
- 16 महाजनपदों का उल्लेख बौद्धों के ग्रंथ "अंगुतर निकाय" और जैनों के ग्रंथ "भगवती सूत्र" से मिलता है।
- भगवती सूत्र महावीर की जीवनी है।

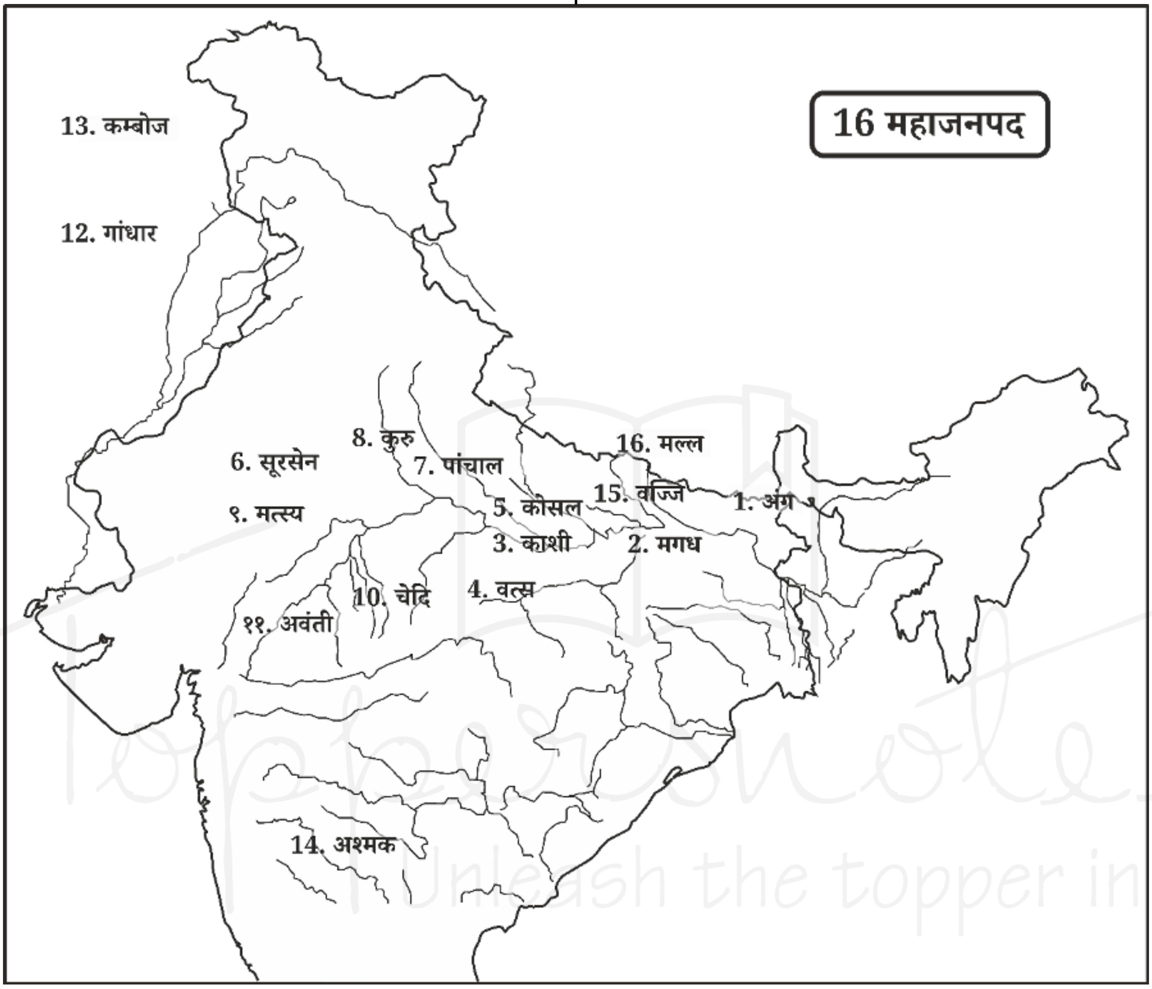

16 महाजनपद

महाजनपद	राजधानी	आधुनिक स्थान
अंग	चंपा	मुंगेर और भागलपुर
मगध	राजगृह/पाटलिपुत्र/गिरिव्रज	गया और पटना
काशी	वाराणसी	बनारस
वत्स	कौशांबी	प्रयागराज
कोसल	श्रावस्ती/अयोध्या	गोंडा, भरई, पूर्वी उत्तर प्रदेश
शूरसेन	मथुरा	मथुरा
पांचाल	अहिच्छत्र और कांपिल्य	बरेली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश
कुरु	इंद्रप्रस्थ	मेरठ और दक्षिण-पूर्व हरियाणा
मत्स्य	विराटनगर	जयपुर
चेदि	सोत्थिवती/बांदा	बुंदेलखंड

अवंति	उज्जैन/ महिष्मति	मध्य प्रदेश और मालवा
गांधार	तक्षशिला	रावलपिंडी
कंबोज	**पूंचा/पुष्कलवती**	राजोरी और हाज़रा (कश्मीर)
अश्मक	प्रतिष्ठान/ पैठन	गोदावरी नदी के किनारे (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद)
वज्जि (8 कुल)	वैशाली	वैशाली
मल्ल	कुशीनारा	देवरिया और उत्तर प्रदेश

नोट: भारत की सीमा के बाहर दो महाजनपद हैं - कम्बोज, गांधार।

- **मगध** 16 महाजनपदों में प्रमुख महाजनपद बनकर पहले भारतीय साम्राज्य का स्थापना की।
- **प्रथम ज्ञात शासक**: हर्यक वंश का **बिम्बिसार** था।

हर्यक वंश (544-412 ई.पू.)

1. **बिम्बिसार (544-492 ई.पू.)**:
   - साम्राज्य विस्तार के लिए वैवाहिक गठबंधन, शक्तिशाली शासकों से मित्रता, और कमजोर पड़ोसी राज्यों पर विजय की नीति अपनाई।
   - कोसल के **राजा प्रसेनजीत** की बहन महाकोसला देवी से विवाह किया और दहेज में काशी का क्षेत्र प्राप्त किया।
   - लिच्छवी प्रमुख की पुत्री चेल्लना से विवाह किया।
   - मद्र (पंजाब) प्रमुख की पुत्री क्षेमा से विवाह किया।
   - **ब्रह्मदत्त को पराजित कर अंग महाजनपद** पर अधिकार किया।
   - चिकित्सक जीवक को अवन्ती शासक चंड प्रद्योत के दरबार में भेज कर मित्रता की |
2. **अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)**:
   - **बिंबिसार के बाद उनके महत्वाकांक्षी पुत्र अजातशत्रु ने शासन संभाला।**
   - **अजातशत्रु** ने कोसल और **वैशाली** पर विजय प्राप्त की।
   - **राजगृह** में राजधानी को स्थापित किया।
   - सप्तपर्णी गुफा में प्रथम में बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया |
3. **उदयिन (460-440 ई.पू.)**:
   - **अजातशत्रु के बाद उदयिन ने शासन संभाला।**
   - **गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र** (पटना) में किले का निर्माण किया।
   - उदयिन के बाद शिशुनाग वंश की स्थापना हुई।

शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

- **शिशुनाग** ने **अवंतिका** (मालवा) पर विजय प्राप्त की।
- उनके उत्तराधिकारी **कालाशोक** के शासनकाल में द्वितीय **बौद्ध संगीति** का आयोजन हुआ।

नंद वंश (344-321 ई.पू.)

- इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक **महापद्म नंद**, जिन्होंने **एकराट** की उपाधि धारण की।
- विशाल सेना के साथ **कलिंग** को जीतकर साम्राज्य में शामिल किया।
- धनानंद: नंद वंश का अंतिम शासक, क्रूर और अहंकारी, जिसकी नीतियों के कारण जनता में असंतोष फैल गया और इसी का फायदा उठाकर चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश को समाप्त कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- **धनानंद** के शासनकाल (326 ई.पू.) में **सिकंदर** ने भारत पर आक्रमण किया।

विदेशी आक्रमण

1. **फ़ारसी आक्रमण**

   A. साइरस (558 - 530 ई.पू.)
   - साइरस आकेमेनिड साम्राज्य का विजेता था।
   - यह पहला विजेता था जिसने एक अभियान का नेतृत्व किया और भारत में प्रवेश किया।
   - इसने **गांधार क्षेत्र** को अपने साम्राज्य में मिलाया।

   B. डेरियस प्रथम (522 - 486 ई.पू.)
   - 516 ई.पू. में डेरियस I ने **उत्तर-पश्चिम भारत** में प्रवेश किया।
   - पंजाब, सिंधु और सिंध क्षेत्रों के पश्चिम में कब्जा किया।
2. **यूनानी आक्रमण** - सिकंदर का भारत पर आक्रमण (327-325 ई.पू.)
   - धनानंद के शासनकाल के दौरान, **मैसेडोनिया** के **सिकंदर** ने उत्तर-पश्चिम भारत पर आक्रमण किया।

नोट: हाइडस्पीज/झेलम/वितस्ता का युद्ध - 326 ई. पू.

- 326 ई.पू. में सिकंदर ने **हिंदुकुश पर्वत** को पार किया।
- **तक्षशिला** के शासक **आंभि** ने स्वेच्छा से सिकंदर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।
- सिकंदर ने तक्षशिला से **हाइडस्पीज** (झेलम) नदी के तट तक अभियान किया।
- **हाइडेस्पीज का युद्ध (326ई.पू.)** सिकंदर और राजा **पोरस** के बीच झेलम और ब्यास नदी के बीच **करीं के मैदान** में हुआ।
- सिकंदर ने पोरस को हराया लेकिन उसकी बहादुरी से प्रभावित होकर उसे फिर से सिंहासन पर बहाल कर दिया।

5 CHAPTER

मौर्य एवं मौर्योत्तर काल

- मगध के उत्थान की परिणति मौर्य साम्राज्य के रूप में हुई।
- **साहित्यिक स्रोत** –
  - I. **अर्थ शास्त्र -** कौटिल्य/चाणक्य द्वारा संस्कृत में रचित।
  - II. **मुद्राराक्षस** (गुप्त साम्राज्य के दौरान लिखा गया नाटक)- विशाखदत्त।
  - III. **इंडिका** - मेगस्थनीज(चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेवा दी)।
  - IV. पुराण
  - V. बौद्ध साहित्य- जातक कथाएँ।
  - VI. श्रीलंकाई ग्रंथ: जैसे दीपवंश और महावंश

चंद्रगुप्त मौर्य (321-297 ई.पू.)

- मौर्य साम्राज्य के संस्थापक, राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) थी।
- धनानंद को चाणक्य की सहायता से पराजित कर मौर्य वंश की स्थापना की।
- सेल्यूकस निकेटर (305 ई.पू.) को पराजित किया |
  - जिसके परिणामस्वरूप चंद्रगुप्त को पूर्वी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, और सिंधु नदी के पश्चिम का क्षेत्र मिला।
  - सेल्यूकस ने अपनी बेटी हेलेना का विवाह चंद्रगुप्त से किया।
- सेल्यूकस निकेटर ने मेगस्थनीज को अपना राजदूत बनाकर चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा |
- जैन परंपरा के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य ने श्रवणबेलगोला में सन्यास लिया।
- **चंद्रगुप्त मौर्य के महल**
  - इसकी संरचना अकेमेनिड साम्राज्य (सम्राट डेरियस) के महलों से (पर्सेपोलिस, ईरान में स्थित) प्रेरित है।
  - मुख्य निर्माण सामग्री: लकड़ी।
  - मेगस्थनीज ने इन्हें मानव जाति की सबसे महान कृतियों में से एक माना है।

बिन्दुसार (297-272 ई.पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य के बाद उनके पुत्र बिंदुसार ने शासन संभाला।
- ग्रीक शासकों के साथ व्यापार और सांस्कृतिक संबंध बढ़ाए।
- साम्राज्य का विस्तार मध्य और दक्षिणी भारत में किया।
- संगम साहित्य के अनुसार, उन्होंने मैसूर तक विजय प्राप्त की।
- तारानाथ के अनुसार, बिंदुसार ने 16 राज्यों पर विजय प्राप्त की।
- दो दूत इसके दरबार में आयें :-
  - डायमेकस (सीरिया)
  - डायनोसियस (मिस्त्र)
- ग्रीक शासकों ने उन्हें "अमित्रघात" (शत्रुओं का संहारक) कहा।
- आजीवक धर्म का समर्थन किया।

नोट : आजीवक धर्म एक प्राचीन भारतीय धार्मिक सम्प्रदाय था, जो मुख्य रूप से उच्छृंखलता और आत्मसात के सिद्धांत पर आधारित था। इसके संस्थापक **माखलि गोसाल** थे, जो कि समकालीन बौद्ध धर्म और जैन धर्म के विचारों से भिन्न थे।

अशोक महान (268-231 ई.पू.)

- कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) में भारी जनहानि के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया और सांस्कृतिक विजय की नीति अपनाई।
- उन्होंने **"भेरीघोष"** (युद्ध की आवाज़) को **"धम्मघोष"** (धर्म की आवाज़) से बदल दिया (13वें शिलालेख में उल्लेख)।
- धम्म महामात्रों की नियुक्ति की।
- तीसरी बौद्ध संगीति (250 ई.पू.) पाटलिपुत्र में आयोजित की गई।
- महेंद्र और संगमित्रा को श्रीलंका भेजा, जहां वे बोधि वृक्ष की एक शाखा लेकर गए।

अशोक के शिलालेख

- अशोक के शिलालेख मौर्य साम्राज्य के बारे में सबसे ठोस/पुख्ता जानकारी प्रदान करते हैं।

अशोक के अभिलेख:

- 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने इन्हें पढ़ने में सफलता प्राप्त की।
- ये अभिलेख भारत, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से मिले है ।
- अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा में और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं।
- उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में ये अरामाईक भाषा और खरोष्ठी लिपि में हैं।
- अफगानिस्तान में ये ग्रीक और अरामाईक लिपि में लिखे गए।

1. प्रमुख शिलालेख
2. लघु शिलालेख
3. स्तंभ लेख

Unleash the topper in you

महत्वपूर्ण शिलालेख

- कुल 14 मुख्य शिलालेख
- ये शिलालेख अफगानिस्तान के कंधार, पाकिस्तान के शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा, उत्तर भारत में उत्तराखंड, पश्चिम में गुजरात और महाराष्ट्र, पूर्व में ओडिशा और दक्षिण में कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले तक विस्तृत हैं।
- इन शिलालेखों में अशोक को **"देवानाम प्रियदर्शी"** के रूप में उल्लेख किया गया है।

महत्वपूर्ण मुख्य शिलालेख	
5.	• इस शिलालेख में अशोक ने कहा है: "हर मानव मेरा पुत्र है।" • इसमें धम्ममहामात्रों की नियुक्ति का उल्लेख है। • इसमें दासप्रथा (गुलामी) के प्रति चिंता भी व्यक्त की गई है।
13.	• यह सबसे बड़ा शिलालेख है और अशोक (268-232 ई.पू.) की कलिंग विजय (262-261 ई.पू.) का वर्णन करता है। इसमें बताया गया है कि धम्म के माध्यम से प्राप्त विजय में युद्ध के दौरान 5 लाख लोग मारे गए या निर्वासित हुए, जिससे अशोक को गहरा पश्चाताप हुआ। • धम्म विजय का उल्लेख इन विदेशी शासकों पर किया गया है: • सीरिया का एंटिओकस (अम्तियोक)। • मिस्र का टॉलेमी (तुरमावे)। • साइरीन का मागास (मका)। • मैसेडोन का एंटिगोनस (अम्तिकिनी)। • एपिरस का अलेक्जेंडर (अलिकसुदारो)। • साथ ही, भारतीय दक्षिणी राज्यों के शासकों जैसे पांड्य और चोल का भी उल्लेख किया गया है।

लघु शिलालेख

- लघु स्तंभ शिलालेख उत्तर में नेपाल में (लुम्बिनी के पास) मिले हैं।
- वे 'अशोक' नाम का उल्लेख करते हैं।
- मस्की (कर्नाटक)
- गुर्जरा (मध्य प्रदेश)
- ब्रह्मगिरी (कर्नाटक)
- नित्तूर (आंध्र प्रदेश)

अशोक का महल (कुमराहार)

संरचना: यह लकड़ी की तीन मंजिला इमारत है।

विशेषताएँ: उच्च केंद्रीय स्तंभ, सजावटी नक्काशी और मूर्तियाँ।

स्तूप:

- स्तूप वैदिक काल से भारत में प्रचलित समाधि टीले थे।
- बौद्धों ने स्तूपों को धार्मिक प्रतीक के रूप में लोकप्रिय बनाया।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद 9 स्तूप निर्मित किए गए। इनमें से 8 स्तूपों में बुद्ध के अवशेष रखे गए थे और 9वें में उन अवशेषों का पात्र रखा गया था।

नोट: बुद्ध की मृत्यु के बाद नौ स्थानों -राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, अल्लाकप्पा, रामग्राम, वेथापिडा, पावा, कुशीनगर और पिप्पलिवन में स्तूप बनाए गए।

- अशोक के शासनकाल में स्तूप निर्माण कला अपने चरम पर पहुँच गई और लगभग 84,000 स्तूपों का निर्माण किया गया
- **स्तूपों के उदाहरण:** साँची स्तूप (मध्य प्रदेश), पिपरहवा स्तूप (सबसे पुराना स्तूप, उत्तर प्रदेश)।

नोट: बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात निर्मित 9 स्तूपों के स्थान - राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, अलकप्पा, रामग्राम, वेठपीड, पावा, कुशीनगर और पिप्पलिवन।

मौर्य प्रशासन

- मौर्य साम्राज्य का प्रशासन बहुत ही विस्तृत और संगठित था। मेगस्थनीज और कौटिल्य के **अर्थशास्त्र** में मौर्य प्रशासन का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- यह प्रशासन **विकेंद्रीकृत** था, जिसमें स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर सत्ता का बंटवारा किया गया था।

केन्द्रीय प्रशासन

सप्तांग: मौर्य प्रशासन के 7 अंग

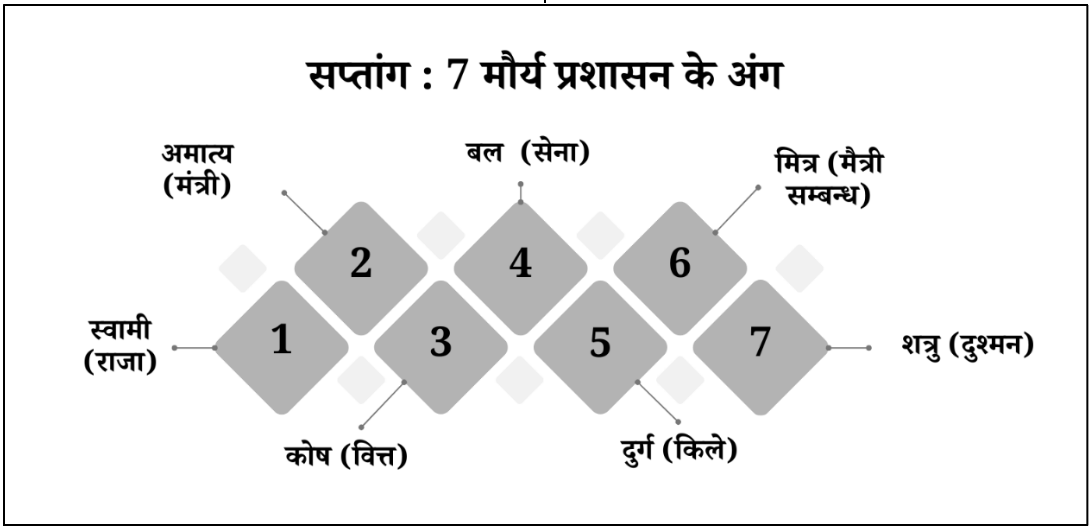

1. **प्रशासन का प्रमुख**
    - शासन व्यवस्था के शीर्ष पर राजा होता था।
    - राजा की सहायता के लिए **मंत्रिपरिषद**, **पुरोहित** (महत्वपूर्ण व्यक्ति), और **महामात्र** (सचिव) होते थे।
2. **राजस्व विभाग**
    - **समाहर्ता** राजस्व संग्रह का दायित्व निभाता था और राजकोष का प्रमुख होता था।
    - **सन्निधाता**: मुख्य कोषाध्यक्ष।
    - **कृषि उपज पर कर**: कृषि उपज पर लगाया गया कर राजस्व का मुख्य स्रोत था, राजा को आमतौर पर उपज का छठा हिस्सा कर के रूप में मिलता था।
3. **न्यायिक प्रशासन**
    - न्याय व्यवस्था दो प्रकार के न्यायालयों के माध्यम से संचालित होती थी:
        - **धर्मस्थीय न्यायालय**: मुख्य रूप से सिविल मामलों (विवाह, उत्तराधिकार, नागरिक जीवन) से संबंधित।
        - अध्यक्षता तीन न्या**यविदों** और तीन **अमात्यों** द्वारा की जाती थी।
        - **कण्टकशोधन न्यायालय**: आपराधिक मामलों को निपटाने के लिए स्थापित।
        - अध्यक्षता तीन **न्यायविदों** और तीन **अमात्यों** द्वारा की जाती थी।

महत्वपूर्ण अधिकारी

- **धम्म महामात्य**: धम्म के प्रचार से जुड़े मंत्री
- **शुल्काध्यक्ष**: कर संग्रहकर्ता
- **सीताध्यक्ष**: शाही भूमि की देखभाल के लिए जिम्मेदार मंत्री
- **नागरिका**: नगर प्रशासन का अधीक्षक
- **भिसज**: चिकित्सक

स्थानीय प्रशासन

- ज़िले का प्रबंधन **स्थानिक** (Sthanika) के नियंत्रण में होता था, जबकि **गोपा** (Gopas) नामक अधिकारी पाँच से दस गाँवों का प्रबंधन करते थे।
- **शहरी प्रशासन** की ज़िम्मेदारी **नगरिक** (Nagarika) संभालते थे।
- गाँव अर्ध-स्वायत्त होते थे, और उनका नेतृत्व **ग्रामणी** तथा गाँव के बुजुर्गों की परिषद करती थी।
- **पाटलिपुत्र** का प्रशासन छह समितियों द्वारा किया जाता था, जिनमें प्रत्येक समिति में पाँच सदस्य होते थे। इन समितियों की ज़िम्मेदारी निम्नलिखित कार्यों की थी:
    - स्वच्छता, विदेशियों की देखभाल, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण, तौल और माप की निगरानी, अन्य प्रशासनिक कार्य।

नोट: श्रेणी/गिल्ड प्रणाली

- **श्रेणी (Guild)**: कारीगरों और व्यापारियों का संगठन जो किसी क्षेत्र में अपने व्यवसाय के संचालन की देखरेख करता था।
- ये संगठन मिलकर अपने उद्योगों को नियंत्रित करते थे, और इनका नेतृत्व **श्रेष्ठि** (Shreshthi) नामक प्रमुख द्वारा किया जाता था।
- मौर्य साम्राज्य के समय **गिल्ड प्रणाली** का औपचारिककरण हुआ।
- **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** जैसे ग्रंथ गिल्डों के कामकाज और उनके आर्थिक एवं प्रशासनिक महत्व पर जानकारी प्रदान करते हैं।

गुफा वास्तुकला

- उपयोग:
    - प्रारंभिक गुफाएँ: जैन और बौद्ध भिक्षुओं के लिए विहार (निवास स्थान) के रूप में उपयोग की जाती थीं, प्रारम्भ में इन्हें आजीवक संप्रदाय द्वारा उपयोग किया गया।
    - परवर्ती गुफाएँ: बाद में यह गुफाएं बौद्ध मठों के रूप में प्रसिद्ध हो गईं।
    - उदाहरण: बराबर गुफाएँ, नागार्जुनी गुफाएँ, नासिक गुफाएँ/पांडव लेनी।

मूर्तिकला

- **उद्देश्य:** स्तूपों की सजावट में जैसे- तोरण और मेधी में, तथा धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रयोग।
- **प्रसिद्ध मूर्तियाँ:** यक्ष और यक्षिणी। (यक्षिणी का सबसे पुराना उल्लेख तमिल ग्रंथ शिलप्पदिकारम में मिलता है)।
- मृद्भांड उत्तरी काले पॉलिश किए हुए बर्तन (NBPW)।

मौर्योत्तर काल -

- मौर्य काल के बाद की राजनीति में मध्य एशियाई विजेताओं जैसे यूनानी-भारतीय (इंडो-ग्रीक), शक, पार्थियन और कुषाणों का आगमन देखा गया।

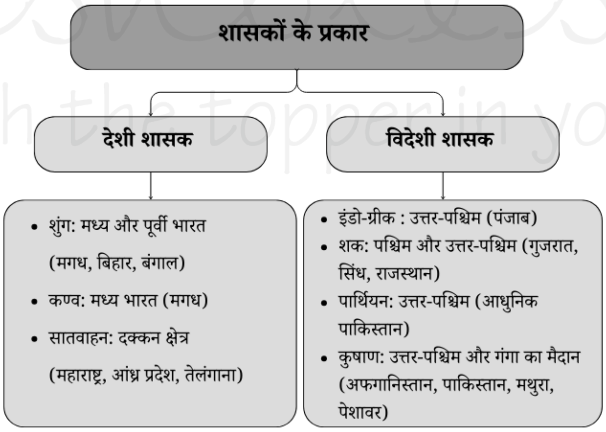

शुंग राजवंश (185 - 73 ई.पू.)

- **संस्थापक**: पुष्यमित्र शुंग, जो एक ब्राह्मण और मौर्य साम्राज्य का सेनापति था।
- **राजधानी**: पाटलिपुत्र और विदिशा (मध्य प्रदेश)।
- **कृतियाँ**:
    - उसने अंतिम मौर्य शासक **बृहद्रथ** की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की।
    - **ब्राह्मणवाद** का प्रबल समर्थक था।

- शुंगों ने **अश्वमेध यज्ञ** और **ब्राह्मणवाद** को पुनर्जीवित किया।
- **वैष्णववाद** और **संस्कृत भाषा** के विकास को बढ़ावा दिया।
- शुंग काल को "वैदिक पुनर्जागरण का काल" कहा जाता है।

- **अंतिम शासक**: **देवभूति**, जिसकी हत्या मंत्री **वासुदेव कण्व** ने की, जिन्होंने बाद में कण्व वंश की नींव रखी।
- **पुष्यमित्र का उत्तराधिकारी अग्निमित्र** था |
- **अग्निमित्र** का **मालविका** के साथ प्रेम संबंध का वर्णन **कालिदास** की रचना **मालविकाग्निमित्र** में वर्णित है।

स्तूप

- **प्रमुख उदाहरण:** भरहुत स्तूप (मध्य प्रदेश), साँची स्तूप का तोरण (मध्य प्रदेश)।

1. **कण्व वंश**
   - **संस्थापक**: **वासुदेव कण्व**।
   - **अंतिम शासक**: **सुशर्मा**।
   - **राजधानी**: पाटलिपुत्र और विदिशा।
2. **सातवाहन राजवंश (60 ई.पू. - 225 ई.)**
   - **राजधानी**: पैठन/प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र)।
   - **संस्थापक**: **सिमुक**, जिन्होंने कण्व वंश के अंतिम शासक **सुशर्मन** की हत्या करके सत्ता प्राप्त की।

महत्वपूर्ण शासक:

- **हाल**: प्राकृत भाषा में **700 श्लोकों वाली 'गाथासप्तशती'** की रचना की।
- **वशिष्ठपुत्र पुलमावी**:
  - **कृष्णा नदी तक साम्राज्य विस्तार** किया।
  - **नौसैनिक शक्ति** का प्रतीक होने के रूप में जहाजों के चित्र वाली मुद्राएँ जारी की।
- **यज्ञ श्री शातकर्णी**: वंश के अंतिम महान शासक।
- **महानतम शासक**: **गौतमीपुत्र शातकर्णी (106-130 ई.)**
  - **नासिक शिलालेख** में इसकी उपलब्धियों का उल्लेख।
  - शकों को हराया, **क्षहारात वंश** को नष्ट किया।
  - उसने **मालवा** और **काठीवाड़** पर कब्जा कर लिया, जिससे उसका साम्राज्य **उत्तर में मालवा** से लेकर **दक्षिण में कर्नाटक** तक फैला।

शैलकृत गुफाएँ

2 प्रकार की शैलकृत गुफाओं का विकास:

1. **विहार**
   - मौर्यकाल में विकसित
   - बौद्ध और जैन भिक्षुओं के लिए निवास स्थल।
2. **चैत्य**
   - समतल छत वाले चौकोर कक्ष
   - प्रार्थना कक्ष के रूप में उपयोग होते थे।
   - शैलकृत गुफाओं की विशेषताएँ:
     - खुले प्रांगण थे।
     - इसकी सजावट मानव और पशु आकृतियों से थी।
   - **प्रमुख उदाहरण:** कार्ले चैत्य, अजंता गुफाएँ (29 गुफाएँ: 25 विहार + 4 चैत्य), उदयगिरी और खंडगिरी गुफाएँ (ओडिशा)।

मूर्तिकला

- मौर्योत्तर काल में मूर्तिकला के 3 प्रमुख शैलियों का विकास हुआ: गांधार, मथुरा और अमरावती।

आधार	गांधार शैली	मथुरा शैली	अमरावती शैली
बाह्य प्रभाव	ग्रीक/हेलेनिस्टिक मूर्तिकला का गहरा प्रभाव; इसे इंडो-ग्रीक कला के नाम से भी जाना जाता है।	भारत में विकसित	भारत में विकसित
प्रयुक्त घटक	प्रारंभिक: नीला-भूरा बलुआ पत्थर बाद में: मिट्टी और मिट्टी का लेपन	चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर	सफ़ेद संगमरमर
धार्मिक प्रभाव	मुख्यतः बौद्ध चित्रण, जिसमें ग्रीक-रोमन देवी-देवताओं का प्रभाव शामिल है।	हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म का प्रभाव।	मुख्यतः बौद्ध धर्म प्रभाव
संरक्षण	कुषाण शासक	कुषाण शासक	सातवाहन शासक
अवस्थिति	उत्तर पश्चिमी सीमांत क्षेत्र (आधुनिक कंधार)।	मथुरा, सोंख, कंकाली टीला (जैन मूर्तियों के लिए उल्लेखनीय)।	कृष्णा-गोदावरी निम्न घाटी, अमरावती, नागार्जुनकोंडा।
बुद्ध मूर्तिकला की विशेषताएं	बुद्ध को एक आध्यात्मिक अवस्था में दर्शाया गया है, घुँघराले लहराते बाल, कम आभूषण, योगी मुद्रा में बैठे हुए, आधे बंद नेत्र, और सिर पर एक उभार, जो सर्वज्ञता का प्रतीक है।	बुद्ध को प्रसन्न मुद्रा में दिखाया गया है, मुस्कुराता चेहरा, गठीला शरीर, कसा हुआ वस्त्र, पद्मासन में विभिन्न मुद्राओं के साथ बैठे हुए, और सिर पर एक उभार (गांधार शैली से ऊँचा)।	व्यक्तिगत विशेषताओं पर कम जोर; मूर्तियों में बुद्ध के जीवन की कहानियां और जातक कथाओं को दिखाया गया है, जो कथात्मक कला पर अधिक ध्यान देती हैं।
अन्य	-	बुद्ध के चारों ओर दो बोधिसत्त्व हैं – पद्मपाणि, जो एक कमल धारण किए हुए हैं, और वज्रपाणि, जो एक वज्र (गर्जना का प्रतीक) धारण किए हुए हैं।	त्रिभंग मुद्रा का अत्यधिक प्रयोग किया गया है -जिसमें शरीर तीन तरफ झुकता है।

विदेशी शासक

1. **बैक्ट्रियन / इंडो-ग्रीक**
   - **डेमेट्रियस**: पहले ज्ञात इंडो-ग्रीक राजा।
   - इन शासकों की पहचान उनके **उत्कृष्ट सिक्कों** से थी, जिन पर राजा की प्रतिमा अंकित होती थी। उन्होंने सबसे पहले **सोने के सिक्के** जारी किए।
   - **मिनांडर/मिलिंद (165-130 ई.पू.)**: प्रसिद्ध इंडो-ग्रीक शासक, जिनके और बौद्ध भिक्षु **नागसेन** के संवाद को **पालि ग्रंथ 'मिलिंदपन्हो'** में संकलित किया गया।
   - **हेलियोडोरस**: यूनानी राजदूत, जिन्होंने **भगभद्र** के दरबार में वैष्णव धर्म अपनाया और **बेसनगर** में **गरुड़ स्तंभ** का निर्माण करवाया।
2. **शक (सीथियन)**
   - शकों ने **सिंधु घाटी** और **सौराष्ट्र** में बस्तियां बनाई और धीरे-धीरे हिंदू समाज में समाहित हो गए।
   - **पहला शक शासक**: **माओस** (20 ई. पू. से 22 ईस्वी)।
   - शकों ने **क्षत्रपों** (प्रांतीय गवर्नर) को नियुक्त किया।

नोटः विक्रमादित्य परमार (57 ई. पू.): इन्होंने शकों को पराजित किया और **विक्रम संवत** की शुरुआत की, जो **हिंदू कैलेंडर** के रूप में प्रचलित हुआ।

3. **पार्थियन/पहलव वंश**
   - ये **ईरान** के निवासी थे।
   - सबसे प्रसिद्ध पार्थियन राजा **गोंडोफर्नेस** थे, जिनके शासनकाल में **संत थॉमस** भारत आए और **ईसाई धर्म** का प्रचार किया।
4. **कुषाण (पहली शताब्दी ई. - तीसरी शताब्दी ई.)**
   - ये **मध्य एशिया** के **युची जनजाति** के पाँच कबीले में से एक थे।
   - **संस्थापक**: **खुजुला कडफिसेस (कडफिसेस I)**, जिनके बाद **विमा कडफिसेस** का शासन आया।
   - इन शासकों ने **कुषाण साम्राज्य** का विस्तार **गांधार**, **पंजाब**, और **गंगा-यमुना दोआब** तक किया।
   - **राजधानी**: **पुरुषपुर** (वर्तमान **पेशावर**) और **मथुरा**।
   - **कनिष्क (78 ई. - 110/102 ई.)**: कुषाण वंश के सबसे महत्वपूर्ण शासक।
     - उन्होंने **78 ईस्वी** से **शक संवत** की शुरुआत की।
     - इसके समय गांधार मूर्तिकला का विकास हुआ
     - **कनिष्क** बौद्ध धर्म के कट्टर अनुयायी थे और उन्होंने **चौथी बौद्ध परिषद** का आयोजन किया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you